दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL8**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): अक्षय तेमगाल

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 08/10/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	3	0	9	2	2	1

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **Five** questions.*

*Candidate has to attempt all **FIVE** questions.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 135

टिप्पणी (Remarks): अच्छा प्रयास, अशुद्धियों पर ध्यान दें। लेखन अभ्यास अपेक्षित

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजियेः 10 × 5 = 50

(क) सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघारिया, अनँत दिखावनहार।।

सन्दर्भ-प्रसंग :- प्रस्तुत दोहा 'गुरु के अंग' से उद्धृत है जिसकी रचना कबीर ने की है।

व्याख्या :- इन पंक्तियों में कबीर गुरु की महीमा का बखान कर रहे हैं।

महिमा

व्याख्या :- कबीर गुरु की महिमा और उनके योगदान की तारीफ करते हुए कहते हैं कि उनके ज्ञान से ही मैं सत्य को देख पा रहा हूँ अन्यथा संसार की माया और लोक नीति में ~~उलझे~~ उलझे रहने के कारण मुझे अपनी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आँखों से भी सत्य की प्राप्ती प्राप्ति नहीं होती।

विशेष
1) भाषा :- पंचमेल खिचड़ी
2) काव्य रूप : मुक्तक
3) छन्द योजना :- दोहा
4) तुक का ख्याल रखा गया है
यथा : उपगार - दिखावनहार
5) शब्द शक्ति : लक्षणा

प्रासंगिकता : आज भी गुरु की महिमा और गुरु का योगदान भारतीय समाज में बरकरार है।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) काहे को रोकत मारग सूधो?
सुनहु मधुप! निर्गुन-कंटक तें राजपंथ क्यो रुँधो?
कै तुम सिखै पठाए कुब्जा, कै कही स्यामघन जू धौं।
बेद पुरान स्मृति सब ढूँढ़ौ, जुवतिन जोग कहूं धौं?
ताको कहा परेखो कीजै जानत छाछ न दूधो।
सूर मूर अक्रूर गए लै ब्याज निबेरत उधो।।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत संवाद सूरदास कृत भ्रमरगीत से उद्धृत है।

प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियों में उद्धव और गोपियों का संवाद प्रस्तुत किया गया है, जिसका मूल विषय है निर्गुण बनाम सगुण भक्ति।

व्याख्या :- गोपियाँ उद्धव से कहती है कि वे क्यों उनका सगुण भक्ति का मार्ग रोक रहे हैं। वे कृष्ण को उलाहना देती हुए कहती हैं कि उन्होंने निर्गुण भक्ति का पाठ पढ़ाने हेतु उद्धव को यहाँ भेज दिया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

एक अक्रूर भी यहाँ आये थे जिन्होंने हमारे कृष्ण को हमसे छीन लिया।

विशेष

1) भाषा : ब्रज भाषा

2) काव्यरूप : न ही प्रबन्ध है, न ही मुक्तक, स्वयं सूर ने इन्हें लीलापद कहा है।

3) छन्द योजना : पद

4) वक्रोक्ति और वाग्विदग्धता का प्रयोग

5) संवाद शैली का प्रयोग

6) उपमा अलंकार और अनुप्रास अलंकार : ब्रुवतिन जोग

7) दर्शन : शुद्धाद्वैतवाद

8) शब्द शक्ति :- लक्षणा

9) रस : श्रृंगार रस

Gw

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरै भौन में करत हैं, नैननु ही सों बात।।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत दोहा रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि बिहारी द्वारा रचित है, जिसका संकलन बिहारी सतसई में हुआ है।

प्रसंग :- भवन में उपस्थित नायक और नायिका के प्रेम प्रसंग का वर्णन है।

व्याख्या :- कवि कहता है कि किस प्रकार भवन में नायक और नायिका अपने हाव भाव और आँखों से बातें करते हैं वे प्रेम प्रसंग बात को कहने से प्रारंभ करते हैं इसके पश्चात नायिका का मना करना, तत्पश्चात गुस्सा हो जाना और फिर फिर नायक के इशारे,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न-संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से मान कर खुशी से मुस्कराना
और अंत में शर्म से लजाना इस
दोहा में अंकित है। ये सारी घटना
भरे भवन में होती है और नैन से
होती है।

विशेष

① भाषा : ब्रज भाषा
② काव्यरूप : मुक्तक
③ छन्द योजना : दोहा
④ समाहार शक्ति का उच्चतम उदाहरण
⑤ नायक और नायिका उच्च वर्ग के न होकर ग्राम समाज के हैं।
⑥ कहत, नटत ... में अनुप्रास अलंकार अपने श्रेष्ठतम रूप में है।
⑦ बिम्ब : दृश्य बिम्ब
⑧ रस : श्रृंगार रस

अनुभाव

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है।।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त कृत 'भारत भारती' से उद्धृत है।

प्रसंग :- भारती अतीत खण्ड से उद्धृत यह पंक्तियाँ भारत की अतिशयोक्ति पूर्ण तारीफ करती है।

व्याख्या :- कवि पहले प्रश्न पूछते है कि सबसे गौरव शाली और पुण्य कर्म भूमि कौन-सी है। वह कौन-सा देश है जिसमें गंगा बहती है और उसकि उत्तर मे हिमालय फैला है। किसका मान सभी देशों से अधिक है और कौन से देश मे ऋषियों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का वास होता है। अंतिम पंक्ति में वह इनका ~~उत्तर~~ जवाब देते हुए बताते हैं कि भारत ही वह सर्वश्रेष्ठ देश है।

विशेष

① भाषा : खड़ी बोली हिन्दी
② छन्द योजना : चतुष्पदी छन्द योजना
③ शब्द शक्ति : अभिधा।
④ इतिवृत्तात्मकता विद्यमान है।
⑤ प्रश्नवाचक शैली का प्रयोग
⑥ प्राकृतिक सौन्दर्य की समाप्ति
⑦ नवजागरण काव्य
⑧ अज्ञेय के शब्दों में भारत के गौरव का इससे अच्छा काव्य दूसरा नहीं।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

सन्दर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ महाप्राण निराला कृत 'राम की शक्ति पूजा' से उद्धृत है।

प्रसंग :- सूर्य अस्त के पश्चात निराला द्वारा अंधकार का वर्णन।

व्याख्या :- निराला ने प्रथम दिन के युद्ध वर्णन के पश्चात चल रही सभा के वर्णन के साथ ही रात्रि रात्री का वर्णन किया। अमावस्या की रात बहुत काली है। ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे काले बादल अंधकार उगल रहे है। इस अवस्था में दिशाओं का पता नहीं चल पा रहा है। वहीं पास में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जो महासागर है, वह भी अपनी लहरों से आवाज कर रहा है। इस अवस्था में एक पर्वत ही आशा रूपी मशाल समान प्रतीत हो रहा है।

विशेष

1. भाषा: खड़ी बोली हिन्दी
2. तत्सम शब्दों का प्रयोग - अम्बुधि
3. काव्य रूप : प्रबन्धात्मक लम्बी कविता
4. छन्द : शक्ति छन्द (डॉ निर्मला)
5. प्रतीकों का अद्भुत प्रयोग : पर्वत को जलती मशाल कहा
6. बिम्ब : भयानक बिम्ब
7. मानवीय अलंकार : बादल अन्धकार उगल रहा है
8. प्राकृतिक रूप की समाप्ति

निराला के जीवन संघर्ष को हो अंधकार को उपस्थित है।

5½ / 10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजियेः 10 × 5 = 50

(क) पीछै लागा जाई था, लोक वेद के साथि,
आगे तैं सतगुर मिल्या, दीपक दीया हाथि।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ कबीर द्वारा रचित हैं जिसका संकलन कबीर ग्रंथावली में हुआ है।

प्रसंग :- गुरु के अंग से उद्धृत यह पद्यांश, गुरु की महिमा का बखान कर रहा है।

व्याख्या :- ~~कवि~~ कवि कहता है कि वह संसार की लोक संस्कृति और वेदों के पीछे पड़ कर अज्ञानता के रास्ते में चल पड़ा था। किन्तु रास्ते में उन्हें सतगुरु मिल गये जिन्होंने ~~कबीर को~~ मुझे सही राह दिखाई। ज्ञान और सत्य का मार्ग

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question - number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिखाया, जिसके सहारे मैं ईश्वर तक पहुँच सकता हूँ

विशेष :-

1) भाषा : सधुक्कड़ी या पंचमेल खिचड़ी

2) काव्यरूप : मुक्तक

3) छन्द : दोहा

4) साथी - हाथी के प्रयोग से दोहे में तुक और लय विद्यमान है।

5). शब्द शक्ति : लक्षणा

6)

प्रासंगिकता : गलत ज्ञान से आज भी लोग गलत मार्ग पर चलने लगते हैं। अर्थात गुरु की महत्ता आज भी है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

नागमती

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) चढ़ा असाढ़ गँगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।
धूम स्याम धौरे घन धाए। सेत धुजा बगु पाँति देखाए।
खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरिसै घन घोरा।
अद्रा लाग बीज भुइँ लेई। मोहि पिय बिनु को आदर देई।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ जायसी कृत पद्मा 'पद्मावत' से ली गई है।

प्रसंग :- नागमती बिरह खण्ड से उद्धृत यह काव्य विरह वर्णन (नागमती का) प्रस्तुत कर रहा है।

व्याख्या :- बारमासा विरह वेदना में नागमती कहती है कि असाढ़ का महीना अर्थात वर्षा ऋतु लग गई है। बादल की आवाज और बिजली की आवाज सुनाई दे रही है। सभी लोग खेती कर रहे हैं, फसल लगा रहे हैं, बीज बो रहे हैं लेकिन मेरे प्रियतम मेरे पास नहीं है और प्रियतम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रूपी पति के न होने से अब समाज में मेरा आदर कौन करेगा।

विशेष :- ① मुक्तक के कथनों में यह हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु है।

② भाषा : अवधी भाषा

③ छन्द : चौपाई और दोहा की कड़वकबन्ध योजना

④ दर्शन : सूफी दर्शन

⑤ बारहमासा। विरह वेदना का वर्णन

⑥ नागमती रानी न होकर एक साधारण स्त्री समान है।

⑦ पवित्र, स्वच्छ और पतिव्रता स्त्री के प्रेम का वर्णन है।

⑧ रस : श्रृंगार रस

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जिसे तुम समझे हो अभिशाप, जगत की ज्वालाओं का मूल-
ईश का वह रहस्य वरदान, कभी मत इसको जाओ भूल।
विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा स्पंदित विश्व महान,
यही दुख-सुख, विकास का सत्य यही भूमा का मधुमय दान।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसाद की अन्यतम कृति कामायनी से उद्धृत हैं

प्रसंग :- श्रद्धा सर्ग से उद्धृत इस अंश में श्रद्धा मनु को समझाती है।

व्याख्या :- श्रद्धा मनु से कहती है कि जिस विनाश को तुम अभिशाप समझ रहे हो वह वरदान है यहीं से मानव जीवन प्रारंभ होगा। यह विश्व अनेकानेक पीड़ाओं और कठिनाईयों से ग्रसित है और मानव के विकास की यही सच्ची कहानी है जिसमें दुख: सुख सभी अंश शामिल है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

1. भाषा : खड़ी बोली हिन्दी
2. तत्समनिष्ठ भाषा का प्रयोग
3. द्वंद्व समास : दुख - सुख
4. दर्शन : प्रत्यभिज्ञ दर्शन
5. काव्यरूप : प्रबन्ध काव्य
6. डॉ नगेन्द्र की आधुनिक कसौटियों के अनुसार यह एक महाकाव्य का अंश है
7. मानव जीवन और मानव - मन के विकास की कहानी
8. रस : आनन्दमूलक शान्त रस
9. गुण : प्रसाद गुण

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर जो? समाचार कछु पाए?
इक अति चतुर हुते पहिले ही, अरु करि नेह दिखाए।
जानी बुद्धि बड़ी, जुवतिन को जोग-सँदेस पठाए।।
भले लोग आगे के, सखि री ! परहित डोलत धाए।
वे अपने मन केंरि पाइए जे हैं चलत चुराए।।
ते क्यों नीति करत आपुन जे औरनि रीति छुड़ाए?
राजधर्म सब भए सूर जहँ प्रजा न जायँ सताए।।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ सूरदास कृत भ्रमरगीत से उद्धृत है जिसका संकलन शुक्ल ने किया है।

प्रसंग :- गोपियों और उद्धव संवाद

व्याख्या :- गोपियाँ ~~कह~~ उद्धव से कहती है कि कृष्ण ने अब राजनीति सीख ली है फलस्वरूप तुम्हें यहाँ भेजा है निर्गुण भक्ति का पक्षधर बना कर। वे तो बचपन से चतुर हुआ करते थे काली आँखे दिखाकर हमारे दिल जीत लिया। करते थे और अब वे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तुम्हें भेज कर हमें निर्गुण भक्ति का पाठ पढ़ाना चाहते हैं।

विशेष

1. भाषा : ब्रजभाषा।
2. रस : श्रृंगार रस
3. काव्यरूप : गीतिपरक
4. छन्द : पद
5. वक्रोक्ति और वाग्विदग्धता का उच्चतम प्रयोग
6. संवाद योजना (गोपियाँ : उद्धव)
7. लयात्मकता और गीतात्मकता सूर के पदों की विशेषता है।
8. निर्गुण बनाम सगुण भक्ति का द्वन्द्व।
9.

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) शत घूर्णावर्त, तरंग- भंग उठते पहाड़,
जल राशि-राशि जल पर चढ़ता खाता पछाड़,
तोड़ता बन्ध-प्रतिसंध धरा, हो स्फीत-वक्ष
दिग्विजय-अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष।

सन्दर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ महाप्राण निराला कृत राम की शक्ति पूजा से उद्धृत हैं।

प्रसंग: इन पंक्तियों में ~~अन~~ हनुमान की मानसिक कल्पना का वर्णन है

~~व्याख्या~~

व्याख्या: कवि हनुमान की मानसिक यात्रा का वर्णन करते हैं जिसमें हनुमान ~~सौ~~ - सर्व पवन के वेगों को समाविष्ट कर लेते हैं वायु वेग पहाड़ों तक पहुँच जाता है जल की लहरें भी हाहाकार मचा रही है और हनुमान अनेकों बाधाओं को तोड़ते हुए विजय

अनेक (बहुवचन है)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number - in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यात्रा को निकल जाते हैं

विशेष

① भाषा : खड़ी बोली हिन्दी
② तत्समनिष्ठ भाषा का प्रयोग
③ काव्यरूप :- प्रबन्धात्मक लम्बी कविता
④ छन्द : शक्ति छन्द
⑤ प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रयोग
⑥ रस : वीर रस
⑦ छायावाद का प्रभाव स्पष्ट है
जैसे : प्रकृति
⑧ पौराणिक ढाँचा : कृतिवास रामायण
⑨ प्रतीक रूप में चरित्र विद्यमान है
हनुमान : क्रांतिकारी
राम : गांधी
सीता : भारत माता

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) नैना नीझर लाइया, रहट बहै निस जाम।
पपीहा ज्यूँ पिव पिव करौं, कब रु मिलहुगे राम।।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ कबीरदास द्वारा रचित हैं जिसका सकंलन कबीर ग्रंथावली में किया गया है।

प्रसंग :- ईश्वर से मिलने की छटपटाहट इन पंक्तियों में व्यक्त है।

व्याख्या :- कबीर कहते हैं कि हे राम तुम कब मिलोगे। मैं तुमसे मिलने को व्याकुल हूँ। तुम्हारें मिलन में विलम्ब के कारण मेरी आँखों से आँसू बह रहे हैं और मेरा हाल उस पक्षी के समान हो गया है जो पिव पिव करता रहता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

भाषा : सधुक्कड़ी

1. रस : श्रृंगार रस
2. काव्यरूप : मुक्तक
3. छन्द : दोहा।
4. उपमा अंलकार (पपीहा)
5. शब्द शक्ति : लक्षणा
6.

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) न्यायोचित सुख सुलभ नहीं
जब तक मानव-मानव को,
चैन कहाँ धरती पर, तब तक
शान्ति कहाँ इस भव को?
"जब तक मनुज-मनुज का यह
सुख-भाग नहीं सम होगा,
शमित न होगा कोलाहल,
संघर्ष नहीं कम होगा।

~~सन्दर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसाद कृत कामायनी से उद्धृत है।~~

~~प्रसंग : श्रद्धा मनु को समझाती है।~~

~~व्याख्या :~~

सन्दर्भ : प्रस्तुत पंक्तियां दिनकर कृत कुरुक्षेत्र से उद्धृत हैं।

प्रसंग : भीष्म के कथन हैं।

व्याख्या :- भीष्म युधिष्ठिर को समझाते हुए कहते हैं कि इस संसार में जब तक सभी लोग सुखी नहीं रहेंगे, जब तक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उनको सारी सुख शांति नहीं मिलेगी, तब तक धरती पर शांति की स्थापना नहीं होगी जब तक समता और समानता नहीं होगी लोग संघर्ष करते रहेंगे।

विशेष

1. मार्क्सवाद का प्रभाव (संघर्ष...)
2. भाषा: खड़ी बोली हिन्दी
3. शब्द शक्ति: अभिधा।
4. राष्ट्र चेतना का काव्य
5. समाज में समानता की कल्पना
6. रस: वीर रस
7. प्रश्नवाचक शैली का प्रयोग

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) बिलग जनि मानहु, ऊधो प्यारे!
वह मथुरा काजर की कोठरि जे आवहिं ते कारे।।
तुम कारे, सुफलकसुत कारे, कारे मधुप भँवारे।
तिनके संग अधिक छबि उपजत, कमलनैन मनिआरे।।
मानहु नील माट तें काढ़े लै जमुना ज्यों पखारे।
ता गुन स्याम भई कालिंदी सूर स्याम गुन न्यारे।।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ सूरदास कृत 'भ्रमरगीत' से उद्धृत हैं।

प्रसंग : गोपियों और उद्धव संवाद

व्याख्या : गोपियाँ उद्धव से शिकायत करती हुई कहती हैं कि मथुरा एक काजल की कोठी है। वहाँ से आने वाले लोग बुरे; कपटी हैं तुम, सुफलकसुत और कृष्ण सभी उसके प्रभाव से कपटी हो गये हैं वे आगे कृष्ण के ~~साथ~~ साथ बिताए पलों का वर्णन करती हैं। उनके साथ गोपियाँ यमुना तट पर

शिकायत

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खेला करती थी।

विशेष

1. भाषा : ब्रज भाषा
2. रस : श्रृंगार रस, वियोग रस
3. वक्रोक्ति और वाग्विदग्धता का प्रयोग
4. काव्यरूप : लीलापद
5. छन्द : पद
6. संवाद योजना
7. ग्रामीण और शहरी जीवन की तुलना
8. प्रकृति का प्रयोग : यमुना

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) जौ रोऊं तौ बल घटै, हँसौं तौ राम रिसाइ।
मनंही माँहि बिसूरणां, ज्यूँ घुँण काठहि खाइ।।

सन्दर्भ : प्रस्तुत पंक्तियां कबीरदास द्वारा रचित है जिसका संकलन कबीर ग्रंथावली में हुआ है

'विरह को अंग'

प्रसंग :- कबीर अपने ईश्वर के प्रति अपनी विडंबना व्यक्त करता है

व्याख्या : कबीर कहतें है कि अगर वे रोते हैं, तो उनका शारीरिक बल कम होता है और हंसते है, तो राम गुस्सा हो जाते हैं। इसी विडम्बना से प्रभु मुक्ति दिलाओ।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

① भाषा : अवधी
② काव्यरूप : मुक्तक
③ छन्द : दोहा
④ रस : भक्ति रस
⑤ सगुण भक्ति
⑥

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) श्रेय नहीं कुछ मेरा,
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में–
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने,
सब-कुछ को सौंप दिया था–
सुना आप ने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का थाः
वह तो सब-कुछ की तथता थी
महाशून्य
वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन
सब में गाता है।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ अज्ञेय कृत असाध्य वीणा से उद्धृत हैं।

प्रसंग :- प्रियवंद राजा को बताता है कि वीणा वादन में उसका श्रेय नहीं है।

व्याख्या :- प्रियवंद वीणा बजाने के बाद तथा राजा और सभा के लोगों की तारीफ सुनने के बाद राजा से कहता है कि वीणा बजाने में उसका को योगदान नहीं है। यह उसकी अहंकार शून्यता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दर्शाता है। वो कहता है कि उसने आत्मसमर्पण किया जिसके फलस्वरूप नश्वर स्वर से उच्चरित हुआ। अतः वह महामौन स्वर की अनेकों शब्दों से तारीफ करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अनेक

विशेष

1. भाषा : खड़ी बोली हिन्दी
2. मिथकीय ढाँचे पर आधारित
3. काव्यरूप : लम्बी कविता
4. छन्द : छन्द मुक्त
5. ज़ेन बुद्धिज़्म का प्रभाव
6. प्रतीकों का प्रयोग (प्रियवंद, वीणा)
7. मार्क्सवादी धारणा का विरोध
8. छायावाद के बाद कविता श्रव्य न होकर पाठ्य हो गई थी। इसलिए अल्पविराम और पूर्णविराम के प्रयोग का सहारा भी अच्छी तरह लिया है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) विपन्नता के इस अथाह सागर में सोहाग ही वह तृण था, जिसे पकड़े हुए वह सागर को पार कर रही थी। इन असंगत शब्दों ने यथार्थ के निकट होने पर भी, मानों झटका देकर उसके हाथ से वह तिनके का सहारा छीन लेना चाहा, बल्कि यथार्थ के निकट होने के कारण ही उनमें इतनी वेदना-शक्ति आ गई थी। काना कहने से काने को जो दु:ख होता है, वह क्या दो आँखों वाले आदमी को हो सकता है?

सन्दर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेमचन्द कृत 'गोदान' से उद्धृत हैं

प्रसंग: होरी और धनिया के संवाद के बाद का अंश है।

व्याख्या: लेखक कहता है कि धनिया पति रूपी जिस तिनके के सहारे जीवन जी रही है जिसके सहारे सागर पार कर रही है उसके छीन जाने से धनिया की स्थिति बहुत खराब हो जायेगी।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

(1) भाषा : खड़ी बोली हिन्दी

(2) भारतीय समाज में पतिव्रता स्त्री के जीवन में उसके पति की महत्ता का वर्णन

(3) प्रश्नवाचक शैली का प्रयोग

(4) गद्य में अल्पविराम और पूर्णविराम का महत्व अधिक होता है। जो अर्थाभिव्यक्ति में सहायक है।

(5) भाषा : खड़ी बोली हिन्दी

(6) शब्द शक्ति : अभिधा

5 1/2 / 10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों से छल-छल आँसू बहने लगे। वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछती, पर वे बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आये हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आँखें बन्द की, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे।

शीर्षक साहित्य
पीयूष श्रीवास्तव

व्याख्या :- लेखक पुत्र और माता के प्रेम को उद्धृत करते हैं। माँ अपने पुत्र के जाने के कारण बार-बार रो रही है। उसे मनाने का पूरा प्रयास करती है, किन्तु वह नहीं मानता। माँ अपनी भगवान से पुत्र के मंगल की कामना करती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

(1) भाषा : खड़ी बोली हिन्दी

(2) शब्द शक्ति : अभिधा।

(3) रस : वात्सल्य रस

(4) ईश्वरीय शक्ति पर भरोसा

(5) माता और पुत्र के रिश्ते का वर्णन।

गहराई लायें
मॉडल उत्तर देखें

1/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) भविष्य की चिन्ता हमें कायर बना देती है, भूत का भार हमारी कमर तोड़ देता है। हममें जीवन की शक्ति इतनी कम है कि भूत और भविष्य में फैला देने से वह और भी क्षीण हो जाती है। हम व्यर्थ का भार अपने ऊपर लादकर रूढ़ियों और विश्वासों और इतिहासों के मलबे के नीचे दबे पड़े हैं, उठने का नाम ही नहीं लेते, वह सामर्थ्य ही नहीं रही। जो शक्ति, जो स्फूर्ति, मानव-धर्म को पूरा करने में लगनी चाहिये थी, सहयोग में, भाई-चारे में, वह पुरानी अदावतों का बदला लेने और बाप-दादों का ऋण चुकाने की भेंट हो जाती है और यह जो ईश्वर और मोक्ष का चक्कर है, इस पर तो मुझे हंसी आती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'गोदान'
प्रेमचन्द

व्याख्या :- लेखक कहता है कि मनुष्य को भविष्य की चिंता नहीं करनी चाहिए क्योंकि ऐसा करने से वह कमजोर और कायर हो जाता है। अपने भूतकाल के बारे में चिंतन हमारी कठिनाईयों और समस्याओं को और बढ़ा देते है। इसके फलस्वरूप व्यक्ति समाज की बुराईयों, नीतियों, अंधविश्वासों को अपनाने लगता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसका परिणाम यह होता है कि मनुष्य के अन्दर इन बुराईयों से लड़ने की सामर्थ्य समाप्त होने लगता है।
फिर वे सामाजिक बन्धनों, पारिवारिक शृंखला के चक्कर में पड़ जाता है और ईश्वर और मोक्ष की कामना करने लगता है।

विशेष
1. सामाजिक रूढ़ियों पर चोट
2. ईश्वरीय सत्ता और मनुष्य के सम्बन्ध के कारणों की खोज
3. रहस्यात्मक लेख
4. भाषा : खड़ी बोली हिन्दी
5. तत्सम शब्दों का प्रयोग
   जैसे : शृंखला

3/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(घ) धनिया यन्त्र की भांति उठी, आज जो सुतली बेची थी, उसके बीस आने पैसे लायी और पति के ठण्डे हाथ में रखकर सामने खड़े दातादीन से बोली-महराज! घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा। यही पैसे हैं, यही इनका गोदान है।

सन्दर्भ : प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचन्द कृत गोदान से उद्धृत है.

प्रसंग :- उपन्यास के अंतिम हिस्से से लिया गया अंश, जिसमे होरी की मृत्यु के बाद गोदान के जवाब मे धनिया का कर्म।

व्याख्या :- लोगों द्वारा और पंडित द्वारा ओझा. गोदान की बात करने पर धनिया घर के अन्दर जाकर बीस आने ले आती है जो उसने सुतली बेचकर लाये थे। उसे होरी के हाथ पर रख कर गोदान के रूप में बीस पैसे को पण्डित को दे देती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

1. सामाजिक यथार्थ पर कटाक्ष, जो ~~भारि~~ गरीबों को भी रीति-रिवाजों में जकड़ लेता है।
2. प्रेमचन्द ने समकालीन यथार्थ को महाकाव्यात्मक उपन्यास में अच्छी तरह चित्रित किया है।
3. प्रतीक योजना: ~~[illegible]~~ होरी गरीब किसानों का प्रतीक है।
4. वर्ग चरित्र योजना
5. भाषा: खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग।

धार्मिक विडम्बना पर ~~[illegible]~~ पौरुष एवं व्यापक विरोध प्रकट होता है।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) जीना चाहते हो? कठोर पाषाण को भेदकर, पाताल की छाती चीरकर अपना भोग्य संग्रह करो; वायुमंडल को चूसकर, झंझा-तूफान को रगड़कर, अपना प्राप्य वसूल लो; आकाश को चूमकर, अवकाश की लहरों में झूमकर, उल्लास खींच लो।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ:- प्रस्तुत पंक्तियाँ हजारीप्रसाद द्विवेदी कृत 'कुटज' से उद्धृत हैं। जिनका संकलन निबन्ध निलय में किया गया है।

प्रसंग: यह गद्यावतरण निबन्ध के दूसरे भाग से है जहाँ कुटज की विशेषता बताई गई है।

व्याख्या:- लेखक कुटज के जीवन संघर्ष की व्याख्या करते हुए प्रश्न करते हैं कि प्राकृतिक, सामाजिक और ~~सा~~ भौगोलिक कठिनाईयों का सामना कर के जीना चाहते हो। कठिन जलवायु, पृथ्वी के कठोर तल और तूफान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

क्रो का सामना करके अपने अधिकार
को ~~a~~ हासिल करो। आकाश से
अपनी ~~खुशीयां~~ खुशियां छीन लो

विशेष

(1) निबन्ध एक प्रेरणात्मक निबन्ध है
जो कठिनाईयों का सामना करने
को प्रेरित करता है।
(2) प्राकृतिक रूपों का प्रयोग
(3) भाषा : खड़ी बोली हिन्दी
(4) प्रश्नवाचक शैली का प्रयोग।
(5) अल्पविराम का कुशल प्रयोग दृष्टव्य है।
(6)

आत्मपरक शैली

5½ / 10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजियेः $10 \times 5 = 50$

(क) तो क्या ये मेरे मोटे होने के दिन हैं? मोटे वह होते हैं जिन्हें न रिन का सोच होता है न इज्जत का। इस ज़माने में मोटा होना बेहयाई है। सौ को दुबला करके तब एक मोटा होता है। ऐसे मोटेपन में क्या सुख? सुख तो जब है कि सभी मोटे हों।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ :- प्रस्तुत गद्यावतरण प्रेमचन्द कृत गोदान से उद्धृत है।

प्रसंग :- होरी का भाई जब वापस आता है, तब ये उनके मध्य का वार्त्तालाप है।

व्याख्या :- जब होरी का भाई उससे कहता है कि भैया। आप बहुत दुबले हो गये हो, तब, होरी कहता है कि यह उसके मोटे होने के दिन नहीं है तत्पश्चात होरी शोषक वर्ग पर व्यंग्य करता हुआ कहता है कि शोषक वर्ग 100 किसानों का शोषण कर मोटे होते है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

(1) भारतीय किसान के ग्रहण में चोरी और उनका शोषण का मार्मिक चित्रण है।

(2) व्यंग्य शैली में चोरी शोषकों पर व्यंग्य करता है।

(3) भाषा : खड़ी बोली हिन्दी

(4) मुहावरों का प्रयोग "सौ को दुबला कर ..."

(5) प्रश्नवाचक शैली का प्रयोग

(6) सूत्र शैली : "सौ को ..."

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नारी के प्रति अनुराग से, उसके आश्रय की कामना से ही पुरुष उसे अधीन रख कर उसे आत्म-निर्भर नहीं रहने देता। नारी प्रकृति के विधान से नहीं, समाज के विधान से भोग्य है। प्रकृति में और समाज में भी स्त्री तथा पुरुष अन्योन्याश्रय हैं।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत गंधाश। ~~प्रभाद~~ यशपाल ~~कृत~~ कृत दिव्या से उद्धृत है।

प्रसंग :- दिव्या और मारिश ~~का~~ के मध्य संवाद का अंश।

व्याख्या :- मारिश दिव्या के प्रश्नों का जवाब देते हुए कहता है कि इस समाज में नारी और पुरुष एक दूसरे पर निर्भर होने चाहिए किन्तु सामाजिक और सांस्कृतिक विधान ने नारी को निर्भर बना दिया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

(1) ऐतिहासिक ढांचे का प्रयोग उपयोगिता की दृष्टि से

(2) मारिशा चर्वाक दर्शन का समर्थक

(3) मार्क्सवाद का प्रभाव

(4) नारी चिंतन

(5) समता का अधिकार के पक्षधर, मारिशा, समाज की विधियों और नीतियों पर कटाक्ष करते हैं।

(6) भाषा : खड़ी बोली हिन्दी

(7) संस्कृत शब्दों का प्रयोग

शैली : अन्योन्याश्रय

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अहंकारमूलक आत्मवाद का खण्डन करके गौतम ने विश्वात्मवाद को नष्ट नहीं किया। यदि वैसा करते तो इतनी करुणा की क्या आवश्यकता थी? उपनिषदों के नेति-नेति से ही गौतम का अनात्मवाद पूर्ण है। यह प्राचीन महर्षियों का कथित सिद्धांत, मध्यमा प्रतिपदा के नाम से, संसार में प्रचारित हुआ। व्यक्तिरूप में आत्मा के सदृश कुछ नहीं है। वह एक सुधार था, उसके लिये रक्तपात क्यों?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

व्याख्या :- लेखक गौतम के गुणों का बखान करते हुए कहते हैं कि गौतम ने अंहकार को दूर कर विश्वासवाद ~~की स्थापना की~~ को नष्ट किया। आगे कहते हैं कि गौतम ने उपनिषदों और वेदों का सहारा लिया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

1. भाषा सरल, सहज और प्रवाह-मयी है।
2. प्रश्नवाचक शैली का प्रयोग
3. आत्मा और परमात्मा जैसे तत्वों की समष्टि
4. पौराणिक आख्यान
5.

1 / 10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) आज तक के वे भीतरी उबाल और बाहरी दबाव के बीच टुकड़े-टुकड़े होकर हमेशा घुटने ही टेकते आये हैं। हर बार दिनेश को लड़ाई के मैदान में ले तो जरूर गए हैं, पर जैसे ही गोलियाँ चली हैं, उसे वहीं छोड़कर भाग आये हैं- अकेला, निहत्था। वह गोलियों की बौछार से लहूलुहान होता रहा है और ये खुद एक असह्य अपराध बोध से। नहीं, और नहीं; अब तो वे चाहें तो भी शायद ऐसा नहीं कर सकते।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ मन्नू भण्डारी कृत महाभोज से उद्धृत हैं।

प्रसंग :- मि. सक्सेना का आत्मचिंतन इन पंक्तियों में व्यक्त है।

व्याख्या :- मि. सक्सेना सोचते हैं कि वे एक बार युद्ध के मैदान में अपने मित्र दिनेश को छोड़ आये थे ~~जिका~~ जिसका पछतावा उन्हें आज तक है। ~~इ~~ उसके लिए वे खुद को अपराधी समझते रहे। इसलिए वे अब निर्णय लेते हैं कि वे अब ऐसा नहीं करेंगे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

और समनार वे बिसू की मौत की असली वजह तक पहुँचेगी।

विशेष

1. राजनीतिक उपन्यास की सर्वश्रेष्ठ कृति।
2. बिसू की मौत का सभी ने अपने - अपने स्तर पर फायदा उठाया।
3. मनोविश्लेषणवाद : प्रि. सक्सेना का चिंतन
4. भाषा : खड़ी बोली हिन्दी
5. महाभोज एक प्रतीकात्मक नामकरण है

5½ / 10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) पंडित ने रस्सी निकाली। उसका फंदा बनाकर मुरदे के पैर में डाला और फंदे को खींचकर कस दिया। अभी कुछ-कुछ धुँधला-सा था। पंडित जी ने रस्सी पकड़कर लाश को घसीटना शुरू किया और गाँव के बाहर घसीट ले गए। वहाँ से आकर तुरंत स्नान किया, दुर्गापाठ पढ़ा और घर में गंगाजल छिड़का।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत गद्यावतरण प्रेमचन्द द्वारा रचित कहानी 'सद्गति' से उद्धृत है। जिसका संकलन 'प्रेम मानसरोवर' में किया गया है।

प्रसंग :- चम्हार की मृत्यु के बाद पंडित द्वारा किया गया कार्य यहा उद्धृत है।

व्याख्या :- जब हरिजन टोला, लाश को उठाने से मना कर देते हैं, तब पंडित लकड़ी के सहारे एक रस्सी को मुर्दे के पैर में बांधकर उसे गाँव के बाहर छोड़ घसीट कर छोड़ आते है। तथा उसके बाद नहा कर पूजा पाठ कर घर को पवित्र करने

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया ईस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

की कोशिश। ~~4~~ में गंगाजल का छिड़कात करता है

विशेष

(1) समाज में हरिजनों की दयनीय स्थिति को प्रेमचन्द सामने लाये।

(2) समकालीन यथार्थ का यथावत चित्रण

(3) यह आज भी प्रासांगिक बना हुआ है। आज भी छुआछुत और दलितों पर अत्याचार, इस कहानी को प्रासंगिक बनाता है।

(4) भाषा: सरल, सहज और अर्थवान है

(5) ऊँची जाति द्वारा नीची जाति के लोगों के प्रति व्यवहार यहाँ दृष्टव्य हुआ है

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation